हे मेरे नाथ !

# विलक्षण सन्त - विलक्षण विचार

## साहित्य में  अपने नाम तथा चित्र न देने के लिए आधुनिक युग के महान क्रान्तदर्शी सन्त स्वामी श्री शरणानन्द जी महाराज के विचार -

पुस्तक या लेखमें अपना नाम प्रकाशित करने में वे संकोच करते हैं, क्योंकि सत्य की आवाज़ को नाम-रूप आदिमें आबद्ध नहीं करना चाहते ।  मानव की मांग - परिचय

**"सत्य अनन्त है, पुस्तक आदिमें सीमित नहीं हो सकता । सत्य अपना परिचय देने में स्वयं स्वतंत्र है ।"** ये शब्द हैं उन सन्त के जिनकी अमृतवाणी इस पुस्तक में संगृहीत हुई है । इसी अटल सत्य को लक्ष्य में रखकर आग्रह करने पर भी स्वामीजी ने अपना शारीर-सम्बन्धी नाम तथा चित्र इस पुस्तक के साथ देने की अनुमति नहीं दी । जो सत्य स्वामीजी की वाणी के रूप में प्रकट हुआ है, वह तो स्वयं प्रकाशमय है और केवल अपना परिचय देने में ही नहीं, बल्कि श्रद्धालु पाठकों के हृदयों को भी आलोकित करने में स्वयं समर्थ है । **...."जटिल से जटिल दार्शनिक तत्वों तथा आध्यात्मिक रहस्यों की अभिव्यक्ति इतने सीधे-सादे निर्विवाद ढंग से अन्यत्र देखी नहीं गई ।"**

सन्त-समागम भाग-१ - परिचय

**उक्त सन्त के सिद्धान्तानुसार ही उनका नाम नहीं दिया जा रहा है ; क्योंकि उनका यह विचार है कि नाम के आधार पर जो बात चलती है,वह कालान्तर में खत्म हो जाती है और नाम के साथ राग-द्वेष का होना स्वाभाविक है । इसलिए सार्वभौम सत्य के प्रकाशन के साथ नाम न दिया जाए तो अच्छा है । इसके अतिरिक्त विचार तो अनन्त की विभूति है, किसी व्यक्ति की निजी विशेषता नहीं । अतः विचारों का प्रकाशन तो अनन्त की अहैतुकी कृपा से होता है । उसके साथ किसी व्यक्ति विशेष का नाम जोड़ देना प्रमाद है ।**  जीवन-दर्शन  -  आमुख

मानव-मात्र के परित्राण के लिए सर्वमान्य विचार-प्रणाली का सृजन श्री महाराज जी की अन्तर्व्यथा से हुआ था - उसको उन्होंने अपने व्यक्तिगत नाम से प्रकाशित करना पसन्द नहीं किया । जिन्हें अहम् को अभिमान-शून्य रखना अभीष्ट होता है,वे आत्मख्याति से बचकर रहते हैं ।

इसमें दूसरी एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि श्री महाराज जी के विचारानुसार देश, काल, मत, मजहब, सम्प्रदाय एवं वर्ग-निरपेक्ष जो जीवन का सत्य है, उसे व्यक्ति के माध्यमसे प्रकट करना उसका मूल्य घटाना है और सबसे बड़ी बात यह है कि जिन्होंने परम-प्रेमास्पद की सत्ता से भिन्न अपना अस्तित्व ही नहीं रखा, वे अपने नाम के माध्यम से कोई बात कैसे कह सकते थे !

उनकी अहम्-शून्य वाणी में ज्ञान तथा प्रेम की अजस्त्र धारा सहज ही प्रवाहित होती रहती थी, जिसे सुनकर बड़े-बड़े शास्त्रज्ञ कहते थे और आज भी कह रहे हैं कि **"वर्षो तक ग्रंथोंके अध्ययन से दर्शन के जो गूढ़ रहस्य समझ में नहीं आए थे, वे सब इन बे-पढ़े सन्तकी वाणीसे स्पष्ट हो गए ।"**

सन्तवाणी भाग-२ - परिचय (केसेट - 1A)

**इनका प्रादुर्भाव एक विलक्षण विभूति के रूप में हुआ, ऐसा उनके सम-सामयिक सभी महान सन्त एवं महापुरुष मानते हैं ।** प्रचण्डज्ञान, अकाट्य-युक्ति, सरल विश्वास एवं अनन्य-भक्ति - ये सभी पक्ष उनमें अपनी-अपनी पराकाष्ठा पर थे । ऐसा अदभुत कॉम्बिनेशन कहीं देखने में नहीं आता, जैसा परमपूज्य स्वामीजी महाराजमें विध्यमान था । फिर भी उपयुक्त दिव्यताओं को अपनी विशेषता मानने की भूल उन्होंने कभी नहीं की । सन्तवाणी भाग - २ (केसेट - 1A)

सत्य के साथ किसी व्यक्ति विशेष का नाम जोड़ना उनके सिद्धांत से उचित नहीं है । इसी कारण उनके द्वारा रचित पुस्तकों में उनका नाम नहीं दिया जाता । चित्तशुध्धि - भूमिका

स्वामीजीकी कई पुस्तकों के साथ लिखा जाता है -

- "मानव-जीवन की समस्याओं पर एक सन्त के मौलिक, सूक्ष्म एवं अनुभव सिद्ध विचार "
- "एक ब्रह्मनिष्ठ सन्त के उपदेश"
- "मानव के लक्ष्य एवं उसकी प्राप्ति के साधनों पर एक सन्त द्वारा अनूठा प्रकाश"
- " एक महात्माका प्रसाद "

सन्त अमर हैं । उनकी वाणी अमर हैं । इस वाणी के आदर में सत्यका, जीवनका, सन्तका आदर है ।

*(देश, काल, परिस्थिति परिवर्तन तथा व्यवहारिक कारणों के अनुसार आज पुस्तकोंमें स्वामीजी का नाम लिखा जा रहा है तथा पत्रिका में चित्र दिया जाता है)*